एक इनसान

दो किरदार

माइल ख़ैराबादी

अनुवाद

कौसर लईक

एक इनसान : दो किरदार

सन् 1947 ई. से पहले की बात है। भारत में एक छोटा-सा राज्य था। एक बार उसके राजा ने हुक्म दिया कि उसके राज्य में जो सबसे ज़्यादा उम्र वाला और सबसे ज़्यादा बूढ़ा आदमी हो उसे हाज़िर किया जाए। आदेश सुनते ही पूरे राज्य में सबसे ज़्यादा उम्र वाले आदमी की खोज शुरू हो गई। बड़ी तलाश के बाद एक मल्लाह मिला। वह बहुत बूढ़ा था। उसकी पलकें भी सफेद हो चुकी थीं और भौंओं की खाल लटककर आँखों तक आ चुकी थी। सिपाही उस बूढ़े मल्लाह को राजा के दरबार में ले गए। राजा ने उसका नाम, पता और काम पूछा और पूछा कि वह कब, कहां और किस साल पैदा हुआ था और उसकी उम्र कितनी है? बूढ़ा अपने जन्म का साल तो न बता सका, लेकिन उसने बताया कि सन् 1857 ई. में जब आज़ादी की पहली लड़ाई हुई तो वह जवान था और उसने उससे पहले नवाब का शासनकाल भी देखा है, तो राजा समझ गया कि वह आदमी वास्तव में राज्य का सबसे ज़्यादा उम्र वाला है। राजा ने उससे पूछा, "तुमने अब से पहले का ज़माना भी देखा है और आज का ज़माना भी देख रहे हो। यह बताओ कि पिछले ज़माने में और आज के ज़माने में क्या अन्तर है?" इस सवाल के जवाब में उस बूढ़े आदमी ने कहा—

"माई-बाप वही धरती अब भी है जो पहले थी, वही आकाश अब भी है जो पहले था, हवा भी वैसी ही चलती है जैसे पहले चला करती थी। सरकार! मैं सौ साल से भी ज़्यादा समय से इस नदी के

पानी को देख रहा हूँ, जिसमें नाव चलाया क्रता था। नदी का पानी भी उसी प्रकार बह रहा है, जिस तरह मेरे बचपन में बहा करता था। ज़मीन और आकाश के बीच जो कुछ है, सब अपनी-अपनी जगह ठीक-ठीक पहले जैसा ही है, लेकिन....''

बूढ़ा कहते-कहते रुक गया। उसने एक नज़र राजा साहब पर डाली, फिर उसे ख़ांसी शुरू हो गई। जब ख़ांसी ज़रा रुकी तो राजा ने पूछा, ''हाँ, तो तुम लेकिन के बाद क्या कहने वाले थे?''

बूढ़े मल्लाह ने कहा—

''सरकार! लेकिन यह ज़रूर है कि हमारी नीयतों में फ़र्क़ आ गया है।'' राजा ने पूछा—''वह कैसे?'' तो बूढ़ा बोला, ''सरकार! मैं दूसरों की नीयतों के बारे में कुछ नहीं कहूँगा, लेकिन मैं अपनी आप बीती से दो बातें बताता हूँ, जो मुझे अब तक याद हैं। आप उनसे अच्छी तरह समझ लेंगे कि हमारी नियतों में क्या फ़र्क़ आ गया है। यह कह कर बूढ़े मल्लाह ने अपनी बीती इस तरह कहनी शुरू की—

हुज़ूर मैंने जैसा कि बताया, मैं घाट पर नाव चलाया करता था। यह उस सिलसिले की पहली बात है, जबकि मेरी शादी हुए कुछ ही दिन हुए थे। मेरे घर वालों ने मेरी शादी में काफ़ी पैसा ख़र्च कर डाला था, जिसकी वजह से मेरे पिता बहुत क़र्ज़दार हो चुके थे और वे बड़े ही परेशान रहने लगे। उनकी परेशानी का असर मुझ पर भी था। उसी ज़माने में एक बार रात गये एक मुसाफ़िर आया। मैं दिन भर का थका हुआ अपनी झोंपड़ी में सोने जा रहा था। मुसाफ़िर ने मुझ से कहा कि मैं उसे नदी के पार पहुँचा दूँ। मैंने उससे आठ आने मांगे। असल में बात यह थी कि मैं बहुत थक चुका था। अब काम करने को मेरा दिल नहीं चाह रहा था। मुझे आराम करने की ज़रूरत थी। मेरा विचार था कि आठ आने मज़दूरी सुनकर मुसाफ़िर इंकार कर देगा। लेकिन वह

तुरन्त राज़ी हो गया। शायद वह किसी बड़े ज़रूरी काम से जा रहा था। हुज़ूर उस समय आठ आने बहुत ज़्यादा होते थे। वैसे किराया तो सिर्फ़ एक आना ही हुआ करता था। वह राज़ी हो गया तो अब मैं अपनी बात से कैसे फिर सकता था? सरकार! उस वक़्त लोग बात के बड़े धनी होते थे। अपनी बात पर जान दे देते थे, मगर वात नीची नहीं होने देते थे। मैं आठ आने के लिए नहीं, बल्कि ज़ुबान से जो कुछ कह चुका था उसके लिए उठा। मुसाफ़िर को नाव में बिठाया, उसका सामान रखा और चप्पू संभाल लिया। देखते-ही-देखते नाव रात के अंधेरे में नदी की लहरों को काटने लगी और थोड़ी ही देर में दूसरे किनारे जा लगी। मुसाफ़िर झटपट उतरा और अपना सामान सिर पर रखा और मुझे आठ आना देकर अंधेरी रात में एक तरफ़ को तेज़-तेज़ क़दमों से चला गया। मैं भी अपनी झोंपडी में आकर सो गया। सुबह-सबेरे जब नाव को साफ़ करने लगा तो क्या देखा कि नाव में एक थैली पड़ी है। उठाकर देखा तो वह चांदी के सिक्कों से भरी हुई थी। माई-बाप मैं सच कहता हूँ, मेरी नीयत में ज़रा भी तो ख़ोट नहीं आया। मैंने सोचा, थैली को झोंपडी में रखना ठीक नहीं। मैंने उसे नदी के किनारे एक जगह रेत में छिपा दिया। मैं समझ गया था कि यह थैली रात वाले मुसाफ़िर की ही है और वह ज़रूर अपनी रक़म लेने आएगा। मेरा विचार सही निकला। कुछ देर बाद वह आदमी घबराया हुआ आया और मुझ से उस थैली के बारे में पूछा। मैंने तुरन्त मिट्टी से निकाल कर थैली उसको दे दी। थैली को पाकर वह बेहद ख़ुश हुआ और उसे ख़ुश होते देखकर ख़ुद मुझे भी दिली ख़ुशी हुई। हुज़ूर वह ज़माना ऐसा ही था, जब आदमी दूसरों को ख़ुश देखकर ख़ुद भी ख़ुश होता और दूसरों के दुख-दर्द को वैसा ही महसूस करता, जैसा कि अपना ही दुख-दर्द हो। अब तो हालत यह है कि किसी को खाता-पीता और उजले कपड़ों में देखकर आदमी जलने

लगता है। ख़ैर! उसने मुझे इनाम के तौर पर कुछ रुपये देने चाहे। लेकिन मैंने इंकार कर दिया और कहा कि मुझे रुपये लेने होते तो सारे के सारे मेरे पास ही थे, मैं कुल रुपये छिपा लेता और तुमको एक पैसा भी न देता। मुझे इनाम की ज़रूरत नहीं।

अब ज़रा मेरा दूसरा क़िस्सा सुनिए। यह दूसरा क़िस्सा उस समय का है; जब मेरी उम्र 50 साल से ऊपर हो चुकी थी। मैं अपने घर का करता-धरता था। नवाबी का ज़माना ख़त्म हो चुका था। ग़दर की बातें भी ठंडी पड़ चुकी थीं और हर तरफ़ अंग्रेज़ का राज था और विदेशी गोरे हमारी तक़दीर के मालिक बने बैठे थे। उसी ज़माने की बात है, कुछ लोग मेरी नाव से पार हुए। जब वे अपना-अपना सामान लेकर चले गए, तो मुझे नाव में एक चुनोटी पड़ी मिली। हुज़ूर तम्बाकू-चूना रखने की यह डिब्बी बस कोई तीन-चार पैसे की होगी। मैंने वह चुनोटी उठा ली और अपनी झोंपडी में ले आया। शाम को एक आदमी आया और मुझ से बोला, "दादा आज सबेरे नदी पार करते हुए मेरी चुनोटी नाव में रह गई थी, आपको तो नहीं मिली?" झट मेरी ज़बान से निकला, "नहीं, मुझे नहीं मिली।" मैंने साफ़ इंकार कर दिया। हालांकि चुनोटी उस समय भी मेरी जेब में पड़ी हुई थी। सरकार आपने देखा कि मेरा बाप क़र्ज़ के बोझ से दबा हुआ था और हमें पैसे की सख़्त ज़रूरत थी। लेकिन मैंने उस समय हज़ारों रुपयों पर लात मार दी और बिना मेहनत किए इनाम के रूप में मिलने वाली रक़म भी नहीं ली। लेकिन आज एक मामूली-सी चीज़ के लिए मैंने अपनी नीयत ख़राब कर ली।

हुज़ूर मैंने अपनी आप बीती की दो घटनाएं आपको सुना दीं। आप इनसे ही अन्दाज़ा लगा लीजिए कि आज का इंसान पहले जैसा नहीं रहा। दूसरों को भी देख लीजिए। आप यही देखेंगे कि अब भी

वही ज़मीन और आसमान है, जो पहले थे। ज़मीन और आसमान के बीच जो कुछ है, सब पहले जैसा ही है। नदी के बहाव में, सूरज व चांद की चाल में कहीं कुछ फ़र्क़ नहीं आया। मगर हमारी नीयतें अब वैसी साफ़-सुथरी और बेदाग़ नहीं रहीं जैसी पहले थीं। यही कारण है कि हमारे कामों से बरकत उठती जा रही है। हम ज़्यादा-से-ज़्यादा कमाने की धुन में लगे रहते हैं, मगर फिर भी पूरा नहीं पड़ता। जिसे देखो धन की धुन में पागल बना हुआ है। रिश्वत, चोरी, धोखा, धाँधली और ऐसी ही हरकतें बढ़ रही हैं। लेकिन किसी को ख़ुशहाली नसीब नहीं।

सरकार गुस्ताख़ी माफ़ करें। आज जो हाल जनता का है, वही हुकूमतों का है। कई-कई साल के लिए योजनाएं बनती हैं, मगर ज़्यादातर पूरी नहीं होतीं और जो पूरी होती हैं, उनका हाल यह है कि वे ठोस नहीं होतीं। इस साल का बना हुआ पुल अगली बरसात में ध्वस्त हो जाता है। इसका यही कारण है कि हमारी नीयतों में ख़राबी आ गई है, न ठेकेदार की नीयतें ठीक हैं और न निगरानी करने वालों की। जैसे-तैसे लीपा-पोती करके खड़ा कर देते हैं और ले-देकर पास करा लेते हैं और समझते हैं—चलो छुट्टी मिली। सरकार! इन सब बातों को आप मुझ से ज़्यादा ही जानते हैं।

यह कहकर बूढ़ा चुप हो गया। राजा पर उसकी बातों का बड़ा प्रभाव पड़ा और उसने बूढ़े को इनाम देकर इज़्ज़त के साथ विदा कर दिया।

नीयत में बिगाड़

राजा कई दिन तक बूढ़े मल्लाह की बातों पर सोच-विचार करता रहा। आख़िर उसके दिल में यह विचार पैदा हुआ कि इंसान की नीयत

में बिगाड़ क्यों आ जाता है ? इस सवाल के कई जवाब उसके दिमाग़ में आए, मगर उसे किसी बात पर भी इत्मीनान नहीं हुआ। अतः उसने अपने राज्य के उस आदमी को बुलवाने का आदेश दिया जो बड़ा ही समझदार और तजुर्बेकार समझा जाता था और जिसकी बुद्धिमानी की दूर-दूर तक चर्चा थी। यह आदेश सुनकर सिपाही चारों तरफ़ ऐसे आदमी की तलाश में फैल गये और आख़िरकार ऐसे—ही एक आदमी को तलाश कर बादशाह के दरबार में ले आये। राजा ने उससे पूछा-

"एक आदमी बड़ी ईमानदारी और नेक नीयती के साथ जीवन शुरू करता है। लेकिन फिर हम देखते हैं कि उसकी नीयत में बिगाड़ पैदा हो जाता है। आख़िर ऐसा क्यों होता है?"

उस बुद्धिमान आदमी ने राजा की बात ध्यान से सुनी और बोला, "सरकार! यह तो आप जानते ही हैं कि हर आदमी के साथ तरह-तरह की ज़रूरतें लगी हुई हैं। उनमें से कुछ तो ऐसी हैं, जिन्हें दुनिया के ख़ालिक़-मालिक (ईश्वर) ने हर इंसान के पीछे लगा रखी हैं। जैसे भूख के समय खाने की और प्यास के समय पानी की ज़रूरत। सर्दी-गर्मी के कपड़ों की और रहने-सहने के लिए मकान की ज़रूरत। ऐसी ही कई ज़रूरतें हैं, जिनसे इंसान को जीते-जी छुटकारा कभी नहीं मिलता। ये वे ज़रूरतें हैं, जिनमें छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब, राजा-प्रजा सब बराबर हैं।

लेकिन कुछ ज़रूरतें ऐसी भी हैं, जो इन्हीं ज़रूरतों में दिखावा करने से पैदा हुई हैं और वे बड़े लोगों के ही हिस्से में आई हैं। अच्छा व मज़ेदार खाना, बढ़िया-बढ़िया क़ीमती कपडे और शानदार हवेलियां। भांति-भांति के ऐशो-आराम के सामान। मतलब यह कि फ़ितरी ज़रूरतों में ऐसी ज़रूरतें बढ़ा ली गई हैं, जो वास्तव में ज़रूरतें नहीं, बल्कि दिखावा, हवस, ख़्वाहिश और चाह हैं। इनमें बस वही

आदमी पड़ता है, जो अपने आपको बड़ा समझता है या दूसरों को जताना चाहता है कि वह कोई बड़ा आदमी है। इसका प्रभाव यह होता है कि नीयत ख़राब हो जाती है और घर की बरकत भी उठ जाती है। बरकत उठ जाने पर ज़रूरतों और इच्छाओं में दिन रात बढ़ोत्तरी होती रहती है और इस बढ़ोत्तरी की कोई सीमा नहीं रहती। फिर उस 'बड़े आदमी' की देखा-देखी छुटभैये भी उसी राह पर चल पड़ते हैं। नतीजा यह होता है कि वह 'बड़ा आदमी' ख़ुद तो तबाह और बरबाद होता ही है, दूसरे भी उसके कारण तबाह और बरबाद होने लगते है।"

फिर आगे उस बुद्धिमान ने कहा, "सरकार! मैं इस तरह की अनेक घटनाएं जानता हूँ। अगर आप इजाज़त दें, तो मैं एक ऐसी घटना सुनाऊँ, जिसमें हम सबके लिए बड़ी नसीहतें हैं।"

राजा ने कहा, "हाँ! ज़रूर सुनाओ, मैंने इसीलिए तुमको यहां बुलाया है।" तब उस आदमी ने कहा, "हुज़ूर मैंने आपसे इजाज़त इसलिए ली है कि मैं जो क़िस्सा सुनाऊँगा, वह एक राजा का ही है। किताबों में मैंने इसी प्रकार लिखा पाया है कि किसी समय की बात है, एक बादशाह जंगल में शिकार को गया। वहां उसने एक हिरन देखा। राजा ने अपना घोड़ा उस हिरन के पीछे दौड़ा दिया। आगे-आगे हिरन दौड़ता रहा और उसके पीछे-पीछे राजा अपना घोड़ा दौड़ाता रहा। यहाँ तक कि राजा अपने साथियों से बिछड़ गया। हिरन एक जगह जाकर झाड़ियों के पीछे छिप गया। राजा ने अपना घोड़ा इधर-उधर बहुत दौड़ाया, मगर हिरन कहीं नज़र न आया। राजा काफ़ी थक चुका था। जब वह हिरन से निराश हो गया, तो आराम के लिए कोई जगह तलाश करने लगा। उसे एक हरा-भरा बाग़ नज़र आया। वह बाग़ में चला गया और उसके रखवाले से बोला, "भाई! मैं मुसाफ़िर हूँ, अपने साथियों से बिछड़ गया हूँ। मैं

भूखा-प्यासा हूँ। मुझे अपना मेहमान समझो और कुछ खाने-पीने के लिए दो।"

इतना कह कर वह बुद्धिमान आदमी ज़रा देर के लिए रुका, फिर बोला, "हुज़ूर एक वह ज़माना था कि यदि किसी के घर कोई मेहमान आ जाता तो वह बहुत ख़ुश होता और जो कुछ खाने-पीने के लिए अच्छे-से-अच्छा बन पड़ता मेहमान के सामने पेश कर देता और जितना ज़्यादा हो सकता, उसकी सेवा करता। लेकिन आज हमारी हालत यह है कि अगर हमारे घर कोई मेहमान आ जाता है, तो उसको खिलाने-पिलाने के ख़्याल से घर भर का माथा सिकुड़ जाता है। फिर यह चाहते हैं कि जल्दी-से-जल्दी मेहमान को चलता कर दें और जब से यह चाय चली है, तो आदमी सोचता है कि मेहमान को बस एक प्याला चाय पिलाकर ही चलता कर दिया जाए। सोचने की बात है कि इस ज़माने में दो दिलों में कैसे प्रेम-भावना पैदा हो सकती है?" राजा बोला, "तुम ठीक ही कहते हो। मगर यह बताओ कि आगे क्या हुआ?" तो उस आदमी ने यूँ कहना शुरू किया—

"बाग़ का माली एक मेहमान को अपने बाग़ में देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। झट उसके लिए बिस्तर बिछाया और उसको आराम से बिठाया। फिर उसके घोड़े को एक तरफ़ ले जाकर साये में बांधा और उसके खाने के लिए चारा भी डाल दिया। इसके बाद तुरन्त एक पका हुआ अनार तोड़ा और प्याले में उसका रस निचोड़ा। अनार इतना अच्छा था कि एक ही अनार के रस से प्याला पूरा भर गया। फिर उसने वह प्याला मेहमान को पेश किया। अनार का रस बहुत ही मीठा और ख़ुशबूदार था। उस रस को पीकर राजा का दिल ख़ुश हो गया। माली ने एक अनार और तोड़ा। उसके रस से भी प्याला भर गया। राजा ने उसे भी पी लिया। अब उसका पेट भर गया। फिर वह

आराम से लेट गया और लेटे-लेटे सोचने लगा। इस माली की आमदनी का क्या कहना ! वह अन्दाज़ा लगाने लगा कि बाग़ कितना बड़ा है उसमें कितने फल होंगे और उनसे कितने प्याले रस निकलेगा, फिर उसके कितने पैसे मिलेंगे ? फिर राजा के दिल में यह विचार आया कि इसकी आमदनी में से उसको भी हिस्सा मिलना चाहिए। अतः उसने सोचा कि इस बाग़ पर भारी टेक्स लगाया जाए।

राजा सोचते-सोचते सो गया। सोकर उठा तो उसे प्यास लगी। उसने माली से कहा, "भाई प्यास लगी है ! एक प्याला अनार का रस और पिलाओ।" माली ख़ुशी-ख़ुशी उठा। उसने प्याला लिया और एक बड़ा-सा अनार तोड़ा। अब जो वह उसका रस निचोड़ने लगा, तो बिल्कुल ज़रा-सा निकला। उसने दूसरा फल तोड़ा, उसमें से भी ज़रा-सा रस निकला। वह एक के बाद एक अनार तोड़ता रहा और निचोड़ता रहा। मगर प्याला न भरना था, न भरा। 15-20 फलों से जो रस निकला था, उसे मेहमान को पेश कर दिया। राजा ने चखा तो न वैसी मिठास थी, और न ख़ुशबू, न स्वाद। राजा सख़्त हैरान कि आख़िर यह मामला क्या है ? राजा ने माली से पूछा कि भाई यह क्या मामला है कि पहले तो एक ही फल में प्याला भर गया और रस भी बड़ा मज़ेदार था। मगर अब जो फल तुमने तोड़ा, वह अन्दर से सूखा निकला ? माली खुद गहरी सोच में पड़ा हुआ था। उसने मेहमान की तरफ़ ध्यान से देखा और बोला, "मुझे ऐसा लगता है कि आप यहां के हाकिम हैं और आपके मन में कुछ खोट आ गया है। शायद मेरे बाग़ पर टेक्स लगाने का इरादा है।"

माली का जवाब सुनकर राजा बहुत अचम्भे में पड़ गया। वह सोचने लगा कि दिल की बात तो बस ख़ुदा ही जानता है। इस माली ने कैसे समझ लिया कि उसका इरादा क्या है ? उसने माली से कहा, "हां

भाई, तुम्हारा विचार बिल्कुल ठीक है। मैं यहां का राजा हूँ और मेरे मन में टेक्स लगाने वाली बात भी थी। लेकिन यह बताओ कि तुमने यह कैसे समझ लिया कि मैं कोई हाकिम हूँ? और तुमको मेरे दिल की बात का पता कैसे चला?" माली ने कहा, "हुज़ूर जान बख़्शी हो तो अर्ज़ करूँ, सच्ची बात यह है कि आपके आने पर पहली बार जब मैंने अनार तोड़ा था उस समय तक आपकी नीयत बिल्कुल ठीक थी। उसकी बरकत सें एक ही अनार के रस से प्याला भर गया और रस भी मज़ेदार निकला। अब जब आपकी नीयत में बिगाड़ आ गया, तो सारी बरकत उठ गई और 15-20 अनारों में भी प्याला बस आधा ही रहा और वह भी रस बिल्कुल स्वादहीन, तो मुझे बड़े-बूढ़ों की कही हुई यह बात याद आ गई कि 'राजा की नीयत ठीक होती है, तो राज्य की हर चीज़ में बरकत होती है और जब राजा की नीयत में बिगाड़ पैदा होता है, तो सारे देश की बरकत उठ जाती है।' इसलिए जब मैंने अनारों में रस न पाया तो समझ गया कि हो-न-हो, मेरा मेहमान हाकिम है और उसकी नीयत में ख़राबी के कारण ही अनारों की बरकत जाती रही।" यह सुनकर राजा दिल-ही-दिल में बहुत शर्मिन्दा हुआ और उसने टेक्स लगाने का इरादा छोड़ दिया और माली से कहा—"अच्छा, अब जाओ, एक अनार का रस निचोड़ो। माली ने एक अनार का रस जो निचोड़ा तो फिर प्याला भर गया। यह देखकर राजा को यह यकीन आ गया कि सचमुच राजा जैसा होगा, वैसा ही असर उसके राज्य की हर चीज़ पर पड़ेगा। राजा जितना नेक होगा, उतनी ही हर चीज़ में बरकत होगी और अगर उसकी नीयत ख़राब होगी तो हर चीज़ में से बरकत उठ जाएगी।"

इतना क़िस्सा सुनाकर उस बुद्धिमान आदमी ने फिर दम लिया। उसके बाद कहने लगा, हुज़ूर देखा आपने, बादशाहों और राजाओं की बड़ी-बड़ी ज़रूरतें होती हैं, तो उनकी हवस भी टेक्स-पर-टेक्स वसूल

करके भी कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती रहती है। नतीजा यह होता है कि प्रजा पिसती चली जाती है, लेकिन वह जो किसी ने कहा है—

"बहुत निकले मेरे अरमान, लेकिन फिर भी कम निकले।"

बिल्कुल सच कहा है और ऐसे वही लोग होते हैं, जो अपने आपको बड़ा जताने के लिए दुनिया भर का सामान जुटाते रहते हैं और जिनके साथ दिखावा भी बढ़ाते जाते हैं। इसके बाद भी समझते हैं कि अभी उनके पास फ़लाँ और फ़लाँ सामान कम है।

हुज़ूर यह बात कौन नहीं जानता कि ज़रूरत इंसान के दिल में चाह पैदा करती है। ज़रूरत में दिखावे से काम लेने से चाह, इच्छा, कामना और हवस में ज़्यादती पैदा होती है और यही हवस दूसरों पर ज़ुल्म ढाती फिरती है। आज हम अपने चारों तरफ़ जो ज़ुल्म देख रहे हैं, यह हाकिमों के हवस का ही नतीजा है। हमारे बुज़ुर्गों ने ठीक ही कहा है—

"यदि आराम से रहना चाहते हो, तो अपनी ज़रूरतें कम करो। ज़रूरतों को कम करोगे तो एक चीज़ के बाद दूसरी चीज़ की इच्छाएं भी कम होंगी। कम-से-कम इच्छा पैदा होगी, तो नीयत पर भी कम-से-कम असर पड़ेगा और उसको क़ाबू में करना आसान होगा और यदि नीयत पर क़ाबू न रहा तो फिर ख़ुदा ही हाफ़िज़ है।"

वह बुद्धिमान आदमी इस क़िस्से द्वारा यह नसीहत करके ख़ामोश हो गया। राजा उसकी बातों से बहुत प्रभावित हुआ और उसको इनाम में कुछ देना चाहा, तो उस आदमी ने कहा—"हुज़ूर मेरे ख़ुदा ने मुझे काफ़ी दे रखा है। मेरी राय है कि आप जो रक़म मुझे देना चाहते हैं, वह ग़रीबों में बांट दें और उनकी दुआएं लें।" यह सुनकर राजा और भी ज़्यादा ख़ुश हुआ। उस बुद्धिमान को बड़े सम्मान के साथ

विदा किया और उसकी बातों पर विचार करने लगा।

हवस का शिकार

राजा उस बुद्धिमान आदमी की बातों पर जितना ज़्यादा विचार करता, उतनी ही नई-नई बातें उसकी समझ में आतीं। वह यह बात अच्छी तरह समझ गया कि ज़रूरतों में बिला वजह ज़्यादती और दिखावा इन्सान में हवस पैदा कर देता है और हवस नीयत को ख़राब करती है और नीयत की ख़राबी से बरकत उठ जाती है। लेकिन राजा की समझ में यह बात नहीं आई कि नीयत की ख़राबी या हवस से किस प्रकार आदमी ख़ुद तो तबाह व बरबाद होता ही है, लेकिन साथ में दूसरों की तबाही का भी कारण बनता है। वह सोचता रहा कि नीयत की ख़राबी से यह दो तरफ़ा नुक़सान कैसे हो सकता है? ज़्यादा-से-ज़्यादा वह ख़ुद बरबाद हो सकता है, जो हवस करे और जिसे अपनी हवस का शिकार बनाए। राजा ने बहुत सोचा, लेकिन जब उसकी समझ में न आया तो उसने फिर उस समझदार आदमी को बुलवाया। जब वह व्यक्ति दरबार में हाज़िर हुआ तो राजा ने उसे इज़्ज़त के साथ अपने पास बिठाया और कहा–

"आप कोई ऐसी मिसाल दीजिए, जिससे यह मालूम हो सके कि नीयत की ख़राबी से आदमी ख़ुद तो तबाह होता ही है, लेकिन दूसरों की तबाही की भी वजह बनता है?"

समझदार आदमी ने कहा, "सरकार! मैं ऐसी मिसाल आपके सामने पेश कर सकता हूँ, जो मैंने अपने उस्ताद से सुनी थी। मेरे उस्ताद बड़े क़ाबिल और विद्वान आदमी हैं। उन्होंने सभी धर्मों की बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ीं और समझी हैं। वे क़ुरआन की बातें तो जानते ही हैं, साथ ही वेद, तौरेत और इन्जील आदि भी जानते हैं।

नेक धर्म-ग्रंथों का ज्ञान उन्होंने हासिल किया है। अगर आप ख़ुद नकी ज़ुबानी सुनें तो यह ज़्यादा अच्छा होगा।" राजा ने पूछा, "वे हाँ रहते हैं?" तो उसने बताया, "वे यहां से 12 कोस दूर एक पहाड़ र रहते हैं। अब वे बहुत बूढ़े हो गये हैं। वे रात-दिन अल्लाह की बादत में लगे रहते हैं। लेकिन वे लोगों से मिलते भी हैं और उनको च्छी-अच्छी नसीहतें भी करते हैं। किन्तु हुज़ूर, वे बुढ़ापे की वजह यहाँ नहीं आ सकते।"

राजा उस बुद्धिमान की बात सुनकर ख़ुश हुआ और तुरन्त चलने की तैयारी का हुक्म दिया। राजा अपने साथ बहुत-सा ज़रूरी सामान और नौकर-चाकर लेकर रवाना हो गया। राजा उस बुद्धिमान आदमी को अपने साथ राजसी सवारी में बिठा कर साथ ले गया। शाम होते-होते विद्वान उस्ताद की कुटिया के पास जा पहुँचे। राजा ने वहां से दूर ख़ैमे लगवाए और रात को वहीं आराम किया। सुबह होते ही हर तरफ़ से लोग आकर उस्ताद की कुटिया के सामने जमा होने लगे। देखते-ही-देखते वहां एक बड़ी भीड़ जमा हो गई। वे सब उस विद्वान उस्ताद की बातें सुनने के लिए जमा हुए थे। जब सूरज काफ़ी चढ़ गया तो उस्ताद अपनी कुटिया से निकले। पहले उन्होंने लोगों को अच्छी-अच्छी बातों की नसीहत की। उसके बाद आने वाले उनसे सवाल करते रहे और वे उनका जवाब देते रहे। राजा भी सब लोगों के बीच बैठा उनकी बातें ध्यान से सुनता रहा। जब सब लोग अपने-अपने सवालों के जवाब पा चुके तो राजा बड़े अदब के साथ उस्ताद के सामने खड़ा हुआ और पूछा, "जनाब आप मुझे कोई ऐसी मिसाल सुनाएं, जिससे यह मालूम हो सके कि नीयत की ख़राबी से आदमी ख़ुद को तो तबाह करता ही है, साथ ही दूसरों की तबाही का कारण भी बनता है।"

उस बुज़ुर्ग उस्ताद ने राजा पर एक नज़र डाली और फिर हाथ के

इशारे से उसे बैठ जाने को कहा और बोले, "ऐ लोगो! तुमने अपने
भाई का सवाल सुना। अब मैं तुमको एक क़िस्सा सुनाता हूँ। यदि तुम
उसे ध्यान से सुनोगे, तो उसमें तुम्हारे लिए बड़ी नसीहतें हैं। यह
क़िस्सा बहुत पुराना है। तुम जानते हो कि पुराने ज़माने में लोगों को
नसीहतें करने के लिए क़िस्से-कहानियों से मदद ली जाती थी, क्योंकि
क़िस्से-कहानी लोग बड़ी दिलचस्पी से सुनते हैं और उनका असर भी
लेते हैं। इसीलिए इस भाई ने जो सवाल किया, उसके बारे में एक
क़िस्सा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का सुना रहा हूँ, जो एक बड़ा
मशहूर क़िस्सा है। आप जानते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम
अल्लाह के रसूल थे और अल्लाह ने उनको कई चमत्कार दे रखे थे।
एक बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने एक शागिर्द के साथ कहीं
जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक जगह ठहरना पड़ा। उनके पास तीन
रोटियाँ थीं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा, "एक रोटी तुम खा
लो, एक मैं खा लूँ और जो एक बची है, वह कल के लिए रख दो।"
दोनों ने एक-एक रोटी खा ली। फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पानी
पीने चले गए। वापस आए तो एक भी रोटी बाक़ी न थी। उन्होंने
शागिर्द से पूछा कि तीसरी रोटी क्या हुई, तो वह बोला कि मैं यहीं
छोड़कर पानी पीने चला गया था, वापस आ रहा था, तो देखा कि एक
आदमी उस रोटी को लेकर भागा चला जा रहा है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल थे और बड़ी
सूझ-बूझ वाले थे। वे समझ गए कि शागिर्द ने झूठ बोला है और
उसकी नीयत में ख़राबी आ गई है। वह रोटी ख़ुद ही खा गया है
लेकिन अब झूठ बोल रहा है। वे ख़ामोश हो गए और शागिर्द से कुछ
नहीं कहा। फिर उन्होंने रेत के तीन ढेर लगाए। फिर अल्लाह से दुआ
की और वे तीनों ढ़ेर सोने के टीले दिखाई देने लगे। इसके बाद उन्होंने
शागिर्द से कहा, "इनमें से सोने का एक ढेर मेरे लिए है, एक तुम्हारे

लिए और तीसरा उस आदमी के लिए जिसने वह तीसरी रोटी खाई।" यह सुनकर शागिर्द और भी लालच में पड़ गया और झट बोला, "यह तीसरा ढेर भी मेरा ही होना चाहिए, क्योंकि तीसरी रोटी मैंने ही खाई थी।"

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने शागिर्द को समझाया कि तुम हवस में पड़ गए हो। इसीलिए तीसरी रोटी खा गए; और झूठ बोला। उन्होंने कहा, "अब तुम्हारा मेरा साथ नहीं निभ सकता। यह सारा सोना तुम ले लो।" यह कह कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उसे छोड़कर चले गए।

वह लालची शागिर्द वहीं रुका रहा और सोचने लगा कि इतना सारा सोना वह अकेला कैसे ले जाए? फिर वह मज़दूरों की तलाश में निकला। उसे कोई मज़दूर न मिला, तो रात में वहीं ठहर गया। रात को वहां चार आदमी आए। उन्होंने सोने के तीन ढेर देखे और एक आदमी को सोते हुए पाया। चारों ने सोने के लालच में उसे मार डाला और तीनों ढेरों पर क़ब्ज़ा कर लिया। अब उन्होंने विचार किया कि तीन ढेर हैं और हम चार आदमी हैं, सब तौल-तौल कर बांट लेगें। वे इस सोच-विचार के बाद सोने के ढेरों के आसपास सो गये। सुबह हुई तो जागे। उन्हें बड़ी भूख लगी थी। फिर उन्होंने मशविरा किया कि एक आदमी शहर जाए और सबके लिए खाना ले आए, ताकि आराम से खाना खाकर सोने को बांट लिया जाए। अतः एक आदमी शहर चला गया और शेष तीनों वहीं बैठ गए।

इतना सारा सोना देखकर उन तीनों की नीयत ख़राब हो रही थी और वे सोच रहे थे कि किसी तरह सारा सोना उनको ही मिल जाए। जो आदमी खाना लेने गया था, उसकी नीयत भी ख़राब हो गई कि किसी तरह सोने के तीनों ढेरों पर अकेले क़ब्ज़ा करना चाहिए। उसने

खाने में ज़हर मिला दिया, ताकि खाना खाकर उसके तीनों साथी मर जाएं और सारा सोना उसका हो जाए। दूसरी तरफ़ उसके तीनों साथियों की नीयतें भी ख़राब हो चुकी थीं। उन्होंने सलाह की कि जैसे ही चौथा साथी नगर से पलटे उसे मार डालें, ताकि बाक़ी तीनों को पूरा एक-एक ढेर मिल जाए। अतः जैसे ही वह खाना लेकर आया उसके साथी उस पर टूट पड़े और उसको मार डाला। फिर उसका लाया हुआ खाना खाने बैठ गए और खाना खाते ही ज़हर के असर से वे लोग भी मौत की नींद सो गए।"

यह क़िस्सा सुनाकर उस बुज़ुर्ग आलिम ने कहा, "हे ख़ुदा के बन्दो! तुमने देखा, पहले सिर्फ़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के एक शागिर्द की नीयत ख़राब हुई थी। वह अपनी जान से गया। उसकी बदनीयती के कारण चार जानें और बरबाद हो गईं।

जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने शागिर्दों के साथ उधर से वापस पलटे तो देखा रेत के ढेरों के पास पाँच लाशें पड़ी हुई हैं। उन्होंने अपने शागिर्दों को वे लाशें दिखायीं और कहा कि देखो नीयत में ख़राबी आने से कितने आदमी तबाह व हलाक हो गए। डरो नीयत की ख़राबी से और हर वक़्त दुआ करते रहो कि अल्लाह नीयत की ख़राबी से बचाए रखे।"

यह मिसाल सुनाकर और लोगों को नसीहत करके वे बुज़ुर्ग विद्वान उठे और अपनी कुटिया में चले गये। राजा ने बुद्धिमान आदमी को इज़्ज़त के साथ विदा किया और राजधानी वापस आ गया। वह बार-बार इस मिसाल पर विचार करता रहा। आख़िर एक सवाल उसके दिमाग़ में आया कि 'नीयत की ख़राबी से कैसे बचा जाए और आदमी अपने विचारों पर कैसे क़ाबू पा सकता है?' राजा सोचते-सोचते थक गया तो उसने फिर समझदार आदमी को बुलाया

और उसके साथ बूढ़े विद्वान के पास पहुँचा, ताकि दूसरे दिन सुबह सवेरे आलिम साहब से अपने सवाल का ठीक-ठीक जवाब पा सके।

ख़ुदा का डर

सवेरे वे बुज़ुर्ग विद्वान बाहर निकले और लोगों को अच्छी-अच्छी बातें बताने लगे। फिर लोगों ने अपने-अपने सवाल पूछे। उन्होंने उनका जवाब दिया। आख़िर में राजा ने कहा, "हज़रत कुछ दिनों पहले मैं आपके पास हाज़िर हुआ था और मैंने आपसे एक सवाल पूछा था। उसके जवाब में आपने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के एक लालची शागिर्द का क़िस्सा सुनाया था, जिससे मैंने बहुत नसीहत हासिल की। लेकिन हे अल्लाह के नेक बन्दे! मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि आदमी की नीयत को ख़राब होने से कैसे बचाया जाए? हज़रत! मैं यहाँ का राजा हूँ। जो आदमी फ़ितना-फ़साद फैलाता है, उसको मेरे सिपाही पकड़कर जेल में डाल देते हैं, उन पर मुक़दमा चलता है और उनको उचित सज़ा मिलती है। लेकिन नीयत की ख़राबी का पता चलाने का कोई तरीक़ा नहीं। फिर नीयत की ख़राबी को कैसे रोका जाए? और फिर हाकिम को तो जेल का भी डर नहीं उसकी नीयत किस तरह ठीक रह सकती है? मेहरबानी करके इस उलझन को सुलझाएं, ताकि मेरी नीयत भी ख़राब न हो और राज्य में भलाई व बरकत फूले-फले।"

यह सुनकर कि सवाल करने वाला वहां का राजा है, सबके-सब अपनी जगह ठहर गए, जो लोग जाना चाहते थे, वे लोग भी रुक गए और बड़े ध्यान से राजा और बुज़ुर्ग विद्वान की बातें सुनने लगे। बुज़ुर्ग ने राजा को ध्यान से देखा और अपने पास बुलाकर बिठाया और कहा—

"हे राजन ! ख़ुदा आपका भला करे। आपने बहुत अच्छा सवाल किया है। आप मुझे बहुत ही नेक राजा मालूम होते हैं, क्योंकि भलाई और नसीहत हासिल करने के लिए दो बार इतनी दूर का सफ़र किया। रास्ते की तक़लीफ़ उठाई और यहां आये। सुनिए ! मैं आपको एक क़िस्सा सुनाता हूँ, जिससे आप भी समझ लेंगे और यह सारी जनता भी जान जाएगी कि इंसान की नीयत को किस तरह ठीक रखा जा सकता है। फिर उसने यह क़िस्सा सुनाया—

किसी ज़माने में एक राजा था, जो बहुत ताक़तवर और ज़ालिम था। कोई न था जो उसे ज़ुल्म से रोक सके और सज़ा दे सके। एक बार राजा ने सुना कि किसी गांव में एक बड़ी ख़ूबसूरत जवान लड़की है। राजा ने आदेश दिया कि उस लड़की को हाज़िर किया जाए। अतः सिपाही गांव गये और लड़की को ले आए। राजा के आदेश पर लड़की को ख़ाली महल में पहुँचा दिया गया। फिर रात को बादशाह उस लड़की के पास गया और उस लड़की पर हाथ डालना चाहा तो लड़की ने कहा, "राजा साहब पहले महल के सारे दरवाज़े तो बंद करवा दीजिए। कहीं कोई देख न ले।" बादशाह ने कहा—"सारे दरवाज़े बंद हैं।"

लड़की ने कहा, "नहीं हुज़ूर ! अभी एक दरवाज़ा खुला है और एक देखने वाला देख रहा है।"

बादशाह बड़ा हैरान हुआ और पूछा, "बताओ कौन-सा दरवाज़ा खुला है और वह कौन है, जो अब भी देख रहा है?"

लड़की ने नरमी से जवाब दिया, "हुज़ूर ! वह अल्लाह है, जो हमें अब भी देख रहा है। वह सत्तर परदों के अन्दर से भी हमको देख सकता है। उसकी नज़रों से कुछ भी छुपा नहीं। मुझे डर है कि यदि आपने अल्लाह के हुक्म को भुलाकर मुझे छुआ तो आख़िरत के दिन

उसकी कड़ी सज़ा भुगतनी होगी। उसकी ताक़त इतनी बड़ी है कि कोई उससे भागकर जान नहीं बचा सकता।"

लड़की की बात सुनकर वह राजा कांप गया और बोला, "ऐ लड़की! तुम सच कहती हो। वास्तव में अल्लाह हर ढकी-छुपी चीज़ को देखता है और वही है जो हमारी नीयतों को भी ख़ूब अच्छी तरह जानता है। मैं उससे नहीं लड़ सकता।" यह कहकर बादशाह अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा होकर अल्लाह से तौबा करता हुआ वहाँ से चला गया और लड़की को इज़्ज़त के साथ उसके मां-बाप के पास भेज दिया।

यह क़िस्सा सुनाकर उस विद्वान ने कहा, "हे राजन् और ऐ लोगो! सुनो, बस ख़ुदा का डर और आख़िरत का यक़ीन ही ऐसी चीज़ है, जिनको याद रखने से इंसान की नीयत ठीक रहती है। ख़ुदा का डर ही इंसान को अंधेरी कोठरी और अकेले जंगल में गुनाह करने से रोक सकता है।"

यह कहकर बुज़ुर्ग विद्वान अपनी कुटिया में चले गए और राजा अपने साथियों के साथ वापस आ गया। उसने उस समझदार आदमी से कहा, "यदि आप मेरे साथ रहें और मुझे अल्लाह के आदेश बताते रहें, तो यह कितना अच्छा होगा कि मैं अल्लाह से डरते हुए उसके आदेशों का ठीक-ठीक पालन करता रहूँ। मुझे आशा है कि यदि मैंने ऐसा किया तो इसका प्रभाव मेरी प्रजा पर भी पड़ेगा और लोगों की नीयतें भी ठीक रहेंगी।"

कहने वाले कहते हैं और देखने वालों ने देखा है कि जबसे राजा ने अल्लाह से डरकर शासन करना शुरू किया, तो इसके नतीजे में उसके राज्य में नेकियाँ ख़ूब फली-फूलीं और बड़े अच्छे-अच्छे लोग पैदा हुए। उन अच्छे लोगों से दूसरे लोगों ने अच्छाई प्राप्त की। इस तरह

सारे राज्य में सुख-शान्ति और इंसाफ़ का चलन हो गया। लेकिन राजा की मृत्यु के बाद धीरे-धीरे यह हालत बदल गई। शासन ऐसे लोगों के हाथों में चला गया जो लालची और बदनीयत थे। फिर उन्होंने ख़ुदा को मानने से ही इंकार कर दिया, जिसका नतीजा यह हुआ कि चारों तरफ़ फ़ितना-फ़साद और लूट-खसोट का दौर-दौरा हो गया और लोग ऐसी मुसीबतों में घिर गए कि ख़ुदा की पनाह। अब इन मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिए जितनी योजनाएं बनाते हैं, उतनी ही मुसीबतें और बढ़ती चली जाती हैं।

याद रखने की बात

कभी-कभी ऐसे लोग भी देखने में आते हैं कि जो न ख़ुदा को मानते हैं और न आख़िरत को। लेकिन इसके बावजूद बड़ी-बड़ी नेकियाँ करते नज़र आते हैं। सवाल यह पैदा होता है कि आख़िर उनमें वह कौन-सा जज़्बा होता है, जो भलाई पर उभारता है। मिसाल के तौर पर उस शराबी का क़िस्सा आपने सुना होगा, जो घर से शराब पीने बहुत-सी रक़म लेकर निकला। रास्ते में उसने देखा कि एक औरत अपनी जवान लड़की को साथ लिए भीख मांग रही है और कह रही है, "भाइयो! अल्लाह तुम्हारा भला करे। मेरा कोई वारिस नहीं, मुझे इस जवान लड़की की शादी करनी है। मेरी मदद करो।" बहुत कम लोग उस पर दया खाकर कुछ दे देते, जबकि ज़्यादातर उसकी हंसी उड़ा रहे थे और एक बदमाश ने तो भरे बाज़ार में ही लड़की से छेड़-छाड़ शुरू कर दी। यह देखकर वह औरत रोने चिल्लाने लगी और लोग तो बदमाश से डरकर इधर-उधर हो गए, मगर जब शराबी ने यह देखा तो वह बदमाश पर टूट पड़ा। बदमाश जान बचाकर भागा, फिर शराबी ने अपनी जेब से सारी रक़म निकाल कर उस औरत को दे दी और शराब की दुकान पर पहुँच गया। मगर जेब

ख़ाली थी। शराब न मिली। वह बाहर निकला और मौक़ा देखकर एक दुकान से रुपये चुराकर शराब पीने चला गया।

तो देखा आपने एक इंसान के ये भी दो किरदार हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि उस लावारिस औरत के साथ उसने जो व्यवहार किया उसका कारण क्या था? उत्तर इसका यह है कि अल्लाह ने हर आदमी को अच्छी फ़ितरत देकर पैदा किया है। मन की यह भलाई बुरे कामों के कारण दब तो ज़रूर जाती है, मगर मिटती नहीं। कभी-कभी ऐसा होता है कि यह फ़ितरत अचानक उभर आती है, यदि उस समय कोई नेक काम हो गया तो हो गया, नहीं तो फिर वह दबकर रह जाती है। इसी नेक फ़ितरत को 'इंसानियत' भी कहते हैं। यह इंसानियत यदि हमेशा बाक़ी रह सके और उसकी सही तर्बियत हो जाए, तो फिर इंसान में नेकी की आदत पैदा हो जाती है और फिर वह हर समय दूसरों की भलाई के लिए क़ुरबानी देने वाला बन जाता है। इसकी सही तर्बियत के लिए ख़ुदा का डर और आख़िरत के हिसाब का खटका ही वह सच्चा विश्वास है, जो इंसानियत को परवान चढ़ाता है और इंसान को सही तौर पर इंसान बनाता है।

यह पुस्तक 'एक इंसान, दो किरदार' इंसान को इंसान बनाने के लिए ही लिखी गई है। अब अल्लाह जिसको जितनी तौफ़ीक़ दे, वह इससे फ़ायदा उठाएगा।